IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# समाज सुधार में संत कबीर के दोहे का योगदान

लुकेश कुमार चंद्राकर

अतिथि व्याख्याता (हिंदी )

शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय अर्जुंदा जिला बालोद (छ. ग.)

## // शोध सारांश //

संत कबीर एक ऐसे कवि है जो संत, भक्त और समाज सुधारक थे। कबीर जैसे आज तक न कोई दूसरा हुआ और ना ही हो पाएगा । उन्होंने दोहे और अपने वाणी के माध्यम से समाज में फैले कुरीति, ऊंच नीच जाति भेद- भाव और पाखंड को दूर करने का प्रयास किए है। उन्होंने समाज में चल रहे अंधविश्वासों, कुरीतियों पर करारा प्रहार किया है।

**भक्ति माग** भक्ति क्षेत्र के इतिहास में कबीर का व्यक्तित्व अद्भुत है। कबीर भक्तिकाल के पहले ऐसे संत है जिन्होने पूर्ण भक्त का दर्जा प्राप्त है। कविता करना उनका लक्ष्य नहीं था। उनका लक्ष्य भगवत भक्ति था और उस सिलसिले में उन्होंने जो कुछ कहा या लिखा, यदि उसमें कविता है, तो जैसा की आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है, वह घलुए में मिली वस्तु है। इस प्रकार कबीर मूलतः भक्त हैं।

संत कबीर की भक्ति में प्रेम है। इस भक्ति के लिए पुरुषोत्तम अग्रवाल ने लिखा हैं कि भक्ति शब्द मूलतः अनुराग और सहभागी का आशय लेकर ही आया था। इस मूल आशय में समर्पण सत्ता के भय से उत्पन्न नहीं, प्रेम और अनुराग का ही समर्पण है। भक्त पराजित सैनिक की तरह समर्पण करने वाले को नहीं, बराबरी के प्रेम में समर्पण करने वाले को कहा जाता था। यह बात यास्क के निरुक्त और पाणिनी के सूत्रों से स्पष्ट हो जाती है। समाज के बदलने के समानांतर भक्ति भागीदारी कहने को रह गई, नतमस्तक समर्पण को ही भक्ति मान और मनवा लिया गया।

कबीर के दार्शनिक विचार

कबीर के दार्शनिक सिद्धान्त सत्सगं का परिणाम है। कबीर ने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों की सुव्यस्थित व्याख्या नहीं की है। कबीर के व्यक्तित्व की भाँति ही उनके दार्शनिक विचार भी उलझे हुए हैं। कबीरदास एक महान भक्त और संत थे, जिनके दर्शन और विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होने लिखा है–

करत विचार मन ही मन उपजी, ना कहीं गया न आया।

कबीर को ब्रह्म की प्राप्ति निरन्तर चिन्तन से हुई है –

चेतन–चेतन निकासयो नीरु, सो जल निरमलु कथत कबीर।

कबीर के ब्रह्म का स्वरूप अन्य ज्ञानियों के स्वरूप से भिन्न हैं –

कबीर के दर्शन संबंधित प्रमुख विचार

1. एकत्व और अद्वैतवादरू कबीरदास ने एकत्व और अद्वैतवाद की अवधारणा पर जोर दिया, जिसका अर्थ है की सब कुछ एक ही परमात्मा से उत्पन्न हुआ है और उसी में विलीन हो जाता है।

2. भक्ति और प्रेम - कबीरदास ने भक्ति और प्रेम को परमात्मा से जुड़ने का सबसे अच्छा तरीका माना। उन्होंने कहा है कि परमात्मा से प्रेम करना ही सबसे बड़ा धर्म है।

3. जाति और धर्म की आलोचना - कबीरदास ने जाति और धर्म की आलोचना की, जो उस समय के समाज में बहुत प्रचलित थे। उन्होंने कहा है कि परमात्मा के लिए कोई जाति या धर्म नहीं है।

4. आत्म–ज्ञान और आत्म–विकास - कबीरदास ने आत्म–ज्ञान और आत्म–विकास पर जोर दिया। उन्होंने कहा है कि आत्म–ज्ञान ही सबसे बड़ा ज्ञान है, और आत्म–विकास ही सबसे बड़ा लक्ष्य है।

5. सामाजिक न्याय और समानता - कबीरदास ने सामाजिक न्याय और समानता की वकालत की। उन्होंने कहा है कि सभी लोग समान हैं और उन्हें समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए।कबीर ब्रह्म साक्षात्कार के लिए स्वानुभुति के मार्ग को अपनाने पर जोर देते हैं।

**अध्ययन के उद्देश्य** - वर्तमान परिदृश्य में समूचे देश में शिक्षा का विकास हुआ है। लेकिन फिर भी देश में ऊंच - नीच जाति पातीं भेद भाव विद्यमान है, और सभी अपने जाति धर्म को श्रेष्ठ बताते है। अशिक्षित लोग से ज्यादा शिक्षितों में भी यह देखने को मिला है, बड़े बड़े कार्यालयों शिक्षण संस्थानों में भेद भाव अभी भी व्याप्त है। यह शोध पत्र इन्हीं सामाजिक समस्याओं को उजागर कर इसे दूर करने का प्रयास है। इन्हीं भेदभाव के संदर्भ में कबीर के एक दोहा प्रासंगिक है।

**जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान** कबीरदास जी का एक प्रसिद्ध दोहा है, जिसका अर्थ है कि किसी की जाति या धर्म के बारे में न पूछकर, उसके ज्ञान और समझ को महत्व देना चाहिए।

**अध्ययन सामग्री संकलन -** प्रस्तुत शोध में लिए अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया गया है जिसमें द्वितीयक सामग्री के लिए कबीर ग्रंथावली, बीजक, एवं पत्र पत्रिका शामिल है।

**कबीर का समाज–सुधारक व्यतिव -**

कबीर जी ने अपने दोहो साखियों के माध्यम से समाज मे चल रहे मिथ्या आडंबरों से लोक चेतना जगाने की कोशिश की है । उनका मानना है कि ईश्वर का एक ही स्वरूप है चाहे हम जिस नाम से पुकारें, उन्हें याद करने के लिए बाहरी दिखावापन कि जरूरत नहीं हैं वो तो हर एक कण में विद्यमान हैं। कबीर जी ने हर वर्ग जाति धर्म पर सही कटाक्ष किया है साक्ष्य के साथ बिना किसी डर से,उनकी वाणी उनका विचार आने वाले युगों तक सराहे जायेंगे बिना किसी भेद–भाव से।

**कांकर पाथर जोरि कै मस्जिद लई बनाय।**

**ता चढि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय**

अर्थात – कंकर पत्थर यानि (स्टोन) सब कुछ जोड़ करके मस्जिद बना लिया फिर उसके चढ़कर मुल्ला जी जोर जोर से खुदा को आवाज देकर बुला रहे है, मानो खुदा बहरे हैं सुन नहीं पा रहे हो। ये कैसी आस्था है ईश्वर या खुदा के प्रति उन्हें तो पाने के लिए मन से सच्ची आवाज लगाने की जरूरत हैं फिर ये बाहरी दिखावापन क्यों। कबीर का कहना है कि अल्ला ईश्वर को पाना है तो मन से आवाज लगाना चाहिए। न कि बाहरी दुनिया में चिल्ला के खोजना चाहिए।

**पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहाड़ ।**

**घर की चाकी कोई ना पूजे, जाको पीस खाए संसार ।।**

अर्थात - कबीर जी ने मूर्ति पूजा के बारे में कुछ यूं कहा है, अगर पत्थर की पूजा करने से हरि मिल जाते है तो फिर मैं पूरा पहाड़ का पूजा कर लूंगा। और घर में जो चक्की लगा है आटा पीसने वाला वह भी पत्थर का बना है, लेकिन उसका पूजा कोई नहीं करता है जबकि उसका पीसा हुआ आटा सारा संसार खा रहा है।

हमलोग आज भी पत्थर की ही पूजा करते हैं, हमारे लिए हम अपनी आस्था और विश्वास की पूजा करते हैं न कि सिर्फ पत्थर की। कबीर जी एक दार्शनिक कवि थे उस काल में उन्हें जो चीज प्रेक्टिकल लगी उसके बारें मे लिखें इसका मतलब ये नहीं कि वो गलत थे और आज के परिवेश के हिसाब से हमलोग सही हैं।

**माला फेरत जुग गया ,गया न मन का फेर ।**

**कर का मनका छाड़ि के ,मन का मनका फेर ।।**

अर्थात् - इस दोहे में संत कबीर कहते हैं कि माला फेरने से जीवन बीत जाता है, लेकिन मन का फेर नहीं जाता। मन हमेशा उलझन में ही फंस गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि हाथ से माला फेरने की बजाय, मन को बदलने की जरूरत है। यह दोहा संत कबीर के विचारों को दर्शाता है कि बाहरी धार्मिक क्रियाओं की बजाय, मन की शुद्धि और परिवर्तन पर ध्यान देना चाहिए।

**प्रेम न बारी उपजे , प्रेम न हाट बिकाए।**

**राजा प्रजा जो ही रुचे, सिस दे ही ले जाए।।**

अब समाज में एकरूपता दिखने को मिलने लगी है उसमें कबीर दास का दोहा एकदम सटीक बैठता है। संत कबीर कहते है कि प्रेम बाड़ी या खेत में नहीं उगता है और नाही प्रेम हाट बाजार में बिकता है। आप बहुत बड़े (राजा) हो या आप साधारण मनुष्य (रंक) हैं यदि प्रेम चाहिए तो क्रोध, काम, इच्छा त्याग कर शीष झुकना ही पड़ता है।

यह दोहा वर्तमान परिदृश्य बहुत प्रासंगिक है कि लोग आज कल धन को सर्वश्रेष्ठ समझ लिए धनिक व्यक्ति को लगता है कि वह धन से सबकुछ खरीद सकते है ऐसे विचारों पर कबीर का यह दोहा सार्थक होता दिखता है।

**बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।**

**जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।**

अर्थ - कबीर कहते है, जब मैंने इन संसार में बुराई को ढूढा तब मुझे कोई बुरा नहीं मिला, लेकिन जब मेने खुद का विचार किया तो मुझसे बड़ी बुराई नहीं मिली कि मैं दुसरो में अच्छा बुरा देख रहा हूं। आज सारा संसार दूसरों में बुराई खोज है दूसरों का ही कमियां निकालने में लगा लेकिन कभी अपने अंदर झांक कर नहीं देखता है स्वयं में कितनी बुराई छिपी हुई है, व्यक्ति सदैव खुद को नहीं जानता लेकिन दुसरो में बुराई ढूंढते है वास्तव में वहीँ सबसे बड़ी बुराई है।

**पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।**

**ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।**

अर्थ – उच्च ज्ञान प्राप्त करने पर भी हर कोई विद्वान् नहीं हो जाता अक्षर ज्ञान होने के बाद भी अगर उसका महत्त्व ना जान पाए, ज्ञान की करुणा को जो जीवन में न उतार पाए तो वो अज्ञानी ही है लेकिन जो प्रेम के ज्ञान को जान गया, जिसने प्यार की भाषा को अपना लिया वह बिना अक्षर ज्ञान के विद्वान हो जाता है।

**बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।**

**पंथी को छाया नही, फल लागे अति दूर।।**

अर्थात् - संत कबीर जी बहुत ही अनमोल वाणी कहे हैं कि संसार बड़ा कद बड़ा पद बड़े अधिकारी होने से कुछ नहीं होता, बड़ा तो खजूर का पेड़ भी है लेकिन उसकी छाया राहगीर को दो पल का सुकून नही दे सकती और उसके फल इतने दूर हैं कि उन तक आसानी से पहुंचा नहीं जा सकता। इसलिए संत कबीर जी कहते हैं ऐसे बड़े होने का कोई फायदा नहीं, अगर बड़े होना है दिल से और कर्मो से जो बड़ा होना चाहिए, वही सच्चा बड़प्पन होता है।

निष्कर्ष - संत कबीर को समाज सुधारक और कवि के रूप में याद किया जाता है। वो 15 वीं सदी के उच्च कोटि के संत माने जाते हैं। जिन्होंने अपने दोहों के माध्यम से समाज और मानव जीवन की स्थिति के बारे में लोगों को समझाया। इस सम्बन्ध में डॉ. रामकुमार वर्मा ने कबीर के समाज सुधारक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि कबीर जिस संत–मत के प्रवर्तक थे, उसमें बाह्याडम्बर के जितने रूप हो सकते थे, उनका बहिष्कार सम्पूर्ण रूप से किया गया है। यह धर्म का ऐसा रूप है जो हिन्दू–मुसलमान दोनों को सरलता से ग्राह्य हो सकता है। जिन कर्मकाण्डों के कारण दोनों में विरोध हो सकता है, उनका समावेश इस धर्म में नहीं है।ष वास्तव में कबीर निरक्षर होने के बाद भी समाज के श्रेष्ठ शिक्षक थे। कबीर ने समाज में व्याप्त रुढ़ियों, अन्धविश्वासों, सड़ी–गली मान्यताओं, कुरीतियों एवं आडम्बर पर चुन–चुन कर प्रहार किया। वस्तुतः ऐसा उन्होने लोक कल्याण की दृष्टि से किया।

## दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।

यह एक प्रसिद्ध हिंदी दोहा है, जो हमें दुर्बल और कमजोर लोगों के प्रति दया और सहानुभूति रखने की शिक्षा देता है। इसका अर्थ हैरूदृ ष्दुर्बल और कमजोर लोगों को परेशान या सताना नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनकी जीवन शक्ति और संघर्ष करने की क्षमता पहले से ही कमजोर है।ष यह दोहा हमें दूसरों के प्रति दया, करुणा और सहानुभूति रखने की महत्ता को समझाता है। यह हमें यह भी सिखाता है कि हमें अपनी शक्ति और सामर्थ्य का उपयोग दूसरों को परेशान करने या सताने के लिए नहीं करना चाहिए। कबीर समाज में प्रचलित विभिन्न धर्मों के बाह्याडम्बरों से अत्यंत पीड़ित थे। अपने काव्य में उन्होने प्रत्येक धर्म के बाह्याडम्बरों का डट कर विरोध किया है। उन्होने मुल्लाओं और पंडितों को रुढ़ियों का प्रवर्तक माना और दोनों को बहिष्कृत करने की बात कही है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1. शिवकुमार मिश्र, भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य, 2010, पृ.–92

2. अग्रवाल, अकथ कहानी प्रेम की, 2010, पृ.–339–341

3. जी.एन. दास रू मिस्टिक सांग्स ऑफ कबीर, 1996, पृ.–78

4. श्याम सुंदरदास कबीर ग्रंथावली 2011

5. हिंदी साहित्य का इतिहास रामचंद्र शुक्ल 2012

6. कबीर बीजक ग्रंथ 2009